ST. GREGORIOS HIGH SCHOOL
CHEMBUR 400071
HINDI
(Three Hours)

CLASS : X Theexampapers.com **MARKS : 80**

Answers to this paper must be written on the paper provided separately.
You will not be allowed to write during first 10 minutes
This time is spent in reading the question paper
The time given at the head of this paper is the time allowed for writing the answers.
Attempt all question from section A. Attempt any 4 questions from section B answering atleast one question each from two books you have studied and any two other questions.

भाग अ

नोट ः 'भाग अ' के सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए तथा 'भाग ब' के किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए जिसमें चुनी हुई पुस्तकों में से एक-एक प्राश्नों के उत्तर लिखने अनिवार्य है |

प्रश्न १. निम्नलिखित विषयों में सें किसी एक विषय पर निबंध लिखिए ३००-३५० शब्दो से कम का न हो | [१५]

१. खेलों में राजनीति इस विषय पर अपनें विचार प्रकट कीजिए |

२. आपने अपने जीवन के विषय में क्या सोच रखा है| आप क्या बनना चाहेंगें ? अपने उद्धेश्य की प्राप्ति के लिए आप कौन कौन से प्रयास करेंगे ?

३. रूपये के रूपरंग, आकार प्रकार तथा महत्व से आप सभी परिचित हैं | इस विषय को ध्यान में रखकर आत्मकथा शैली में (अपनें आपको रूपया मान कर) एक प्रस्ताव लिखिए |

४. एक कहानी लिखिए जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो -"मजहब नही सिखाता आपस में बैर रखना |"

५. नीचे दिए गए चित्र को ध्यान पूर्वक देखिए और इसके आधार पर एक सारगर्भित प्रस्ताव लिखिए जिसका संबंध चित्र से होना अनिवार्य है |

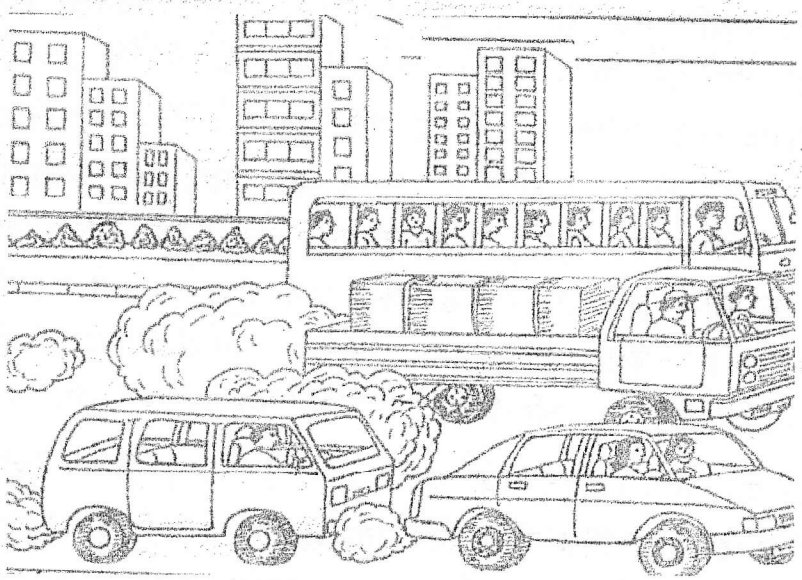

प्रश्न २. निम्नलिखित विष्यों में सें किसी एक विषय पर पत्र लिखिए | [७]

१. छात्रावास में रहते हुए छोटे भाई को पत्र लिखिए जिस मे खान पान की पाश्चात्य संस्कृति से दूर रहने का परामर्श हो |

अथवा

२. स्थानीय समाचार पत्र के कार्यकारी सम्पादक महोदय के नाम पत्र लिखकर राज्य विधुत मंत्री का ध्यान शहर में हों रहे बिजली के दुरूपयोग की और आकर्षित कीजिए |

३. नीचे लिखे गद्यांश को ध्यान पूर्वक पढिए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में होने चाहिए| [१०]

प्रकृति और मनुष्य का संबंध ऐतिहासिक दृष्टि से काफी बाद में शुरू हुआ क्योंकि प्रकृति पहले से थी, मनुष्य ने शीघ्र ही अपनी इच्छा को प्रकृति पर आरोपित करना चाहा और तब से संघर्ष तथा स्वीकृति का एक लोमहर्षक नाटक मनुष्य और प्रकृति के बीच चला आ रहा है।

आज भी मनुष्य प्रकृति का ही पुत्र है। जन्म, जीवन, यौवन, जरा, मरण आदि अपनी अनेक परिस्थितियों में वह आज भी प्रकृति के नियमों से मुक्त नहीं हो सका है। इसके बावजूद निरन्तर उसकी चेष्टा यही रही है कि वह ज्ञान विज्ञान की अपनी सामूहिक उद्यमशीलता के बल पर प्रकृति को अपने वश में कर लें।

यह इतिहास मनुष्य की विजय और प्रगति का इतिहास है या इसकी पराजय और दुर्गति का। इसे वह स्वयं भी ठीक-ठीक नहीं समझ सका है। पर जिसे हम मनुष्य की जय भाषा कहकर पुलकित होते हैं वह असल में मनुष्य की पराजय और आत्म हनन की भाषा है। पिछले कुछ वर्षों में 'परिमंडल विज्ञान' की अत्यधिक चर्चा इस तथ्य का प्रमाण है।

लेकिन, प्रकृति का संतुलन बिगाड़ने की दिशा में मनुष्य पिछले दो, तीन सौ वर्षों के दौरान इतना अधिक बढ़ चुका है कि अब पीछे हटना असंभव सा लगता है। जिस गति से हम विभिन्न क्षेत्रों में प्राकृतिक संतुलन बिगाड़ते रहते हैं, उसमें कोई भी कमी व्यवहारिक नहीं प्रतीत होती। क्योंकि हमारी अर्थव्यवस्थायें और दैनिक आवश्यकतायें उस गति के साथ जुड़ सी गई हैं। क्या हमें ज्ञात नहीं है कि जिसे हम अपना आहार समझ रहे हैं, वह वस्तुतः हमारा दैनिक विष है। जो सामूहिक आत्महत्या की दिशा में हमें लिए जा रहा है।

जंगलों को ही लो, यह एक प्रकट तथ्य है कि विभिन्न देशों की वन-सम्पत्ति अत्यन्त तीव्र गति से क्षीण होती जा रही है। भारत के विभिन्न प्रदेशों, विशेषकर पूर्वांचल के राज्यों, तराई, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, कश्मीर आदि के जंगल भारी संख्या में काटे जा रहे हैं। खूब अच्छी तरह से यह जानते हुए भी कि जंगलों के काटने का मतलब होगा- भूमि को असुरक्षित करना, बाढ़ों को बढ़ावा देना, और मौसम को बदलने में सहायक बनना।

फिर भी हमारी सरकारें इस बर्बादी के रास्ते पर बढ़ने को तैयार हैं। क्योंकि उन्होंने जरूरतें और उम्मीदें इस कदर बढ़ा ली हैं कि अब वे रोकी थामी नहीं जा सकती। आज से बीस साल पहले यदि किसी राज्य को पेड़ों के कटने से दस लाख की आमदनी होती थी तो आज कीमतें और जरूरतें बढ़ जाने के कारण वह इस आमदनी को बीस गुना कर लेना चाहता है। यह तभी मुमकिन है कि जब हर साल पेड़ पिछले साल की तुलना में दुगने काटे जायें। तकरीबन हो भी यही रहा है बावजूद कुछ पहाड़ी इलाकों में चल रहे 'चिपको आन्दोलन', जिसके तहत सामुहिक कटाई का विरोध करने के लिए लोग पेड़ों से चिपक जाते हैं।

(क) मुनष्य और प्रकृति के बीच क्या नाटक चल रहा है और कब से?

(ख) प्रकृति का संतुलन बिगड़ने का मनुष्य को क्या दण्ड मिल रहा है?

(ग) मनुष्य आज भी किन-किन स्थितियों में प्रकृति से बँधा हुआ है?

(घ) आज भी मनुष्य की क्या चेष्टा रहती है?

(ङ) वृक्षों की सुरक्षा के विषय में अपने विचार संक्षेप में लिखिए।

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए- (कोई दो) (1)

(क) लोमहर्षक, दुर्गति, आत्महनन, पुलकित।

(ख) विलोम लिखिए- (कोई दो) (1)

स्वीकृति, संभव, विष, संतुलन।

(ग) भाववाचक संज्ञा बनाइए-(कोई दो) (1)

मजबूर, मुक्त, चढ़ना, गुण।

(घ) नीचे लिखे वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए- (1)

(i) अब पीछे हटना असंभव-सा लगता है।

(बिना अर्थ बदले 'नहीं' का प्रयोग कीजिए।

(ii) अब वे रोकी थामी नहीं जा सकतीं।

(रोकथाम शब्द का प्रयोग कीजिए।)

(ङ) दिए गए मुहावरों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाएँ | (3)
आड़े हाथो लेना , अंग अंग मुस्कराना , जान के लाले पड़ना

भाग – ब

– चनद्रगुप्त विक्रमादित्य –

निम्नलिखित अनुच्छेदों को पढिए एवं उनके नीचे दिए गए प्रश्नो के उत्तर पाठ्य पुस्तक के आधार पर हिन्दी में लिखिए |

प्रश्न १ .

"लेकिन, देवसेना, मैं अपने इस वचन का पालन न कर सका | रामगुप्त को संसार कायर कहता है, लेकिन रामगुप्त कायर नहीं, कायर है चनर्द्रगुप्त जिसने अपने वचन का पालन न कर चुपचाप इतने बड़े अनयाय को सह लिया |"

१ . उपरोक्त कथन के वक्ता का संक्षिप्त परिचय दीजिए | (२)
२ . वक्ता किस वचन की ओर संकेत कर रहा है | वचन का पालन क्यों नहीं किया जा सका ? (२)
३ . रामगुप्त कौन है? संसार उसे कायर क्यों कहता हैं ? (३)
४ . यहाँ किस अन्याय की ओर संकेत किया जा रहा है ? (३)

प्रश्न २ .

" मैं कहती हूँ दूर हो जाओं मेरी आखों के आगे से | मगध के महाराज, मंत्रियों और सेनापतियों से ही नहीं , मुझे मगध के दास दासियों से भी घृणा है | "

१ . उपरोक्त संवाद के वक्ता व श्रोता का परिचय दें |(२)
२ . वक्ता के क्रोध का कारण क्या हैं ? (२)
३ . मगध के प्रति इस अपार घृणा के मूल में क्या कारण हैं ? (३)
४ . प्रस्तुत संवाद के बाद कौन प्रवेश करता है और क्या देखता है ? (३)

प्रश्न ३ .

" मगध लौटने पर चंद्रगुप्त का प्रजा ने बड़ा शानदार स्वागत किया | सारे पाटलिपुत्र नगर में दीपमालिकाएँ सजाई गई |"

१ . चन्द्रगुप्त कहाँ से लौटा था ?(२)
२ . चन्द्रगुप्त के स्वागत का क्या कारण था ?(२)
३ . मगध में आते ही चंन्द्रगुप्त ने कौन से कार्य किए? (३)
४ . चन्द्रगुप्त के मगध का शासक बनते ही वहाँ की प्रजा ने कैसा अनुभव ? (३)

– कथा मंजूषा –

प्रश्न १

आज मधूलिका उन बीते हुए क्षणों को लौटा लेने लिए विकल थी |

१) मधूलिका किन बीते हुए क्षणों कें बारें में सोच रही थी ? (२)
२) वह उन को लौटा लेने लिए विकल क्यों थी ? (२)
३) मधूलिका के हृदय की मनःस्थिति स्पष्ट कीजिए | (३)
४) मधूलिका क्यों काँप उठी? (३)

प्रश्न २
" डॉ. ने जगीरीमल को धैर्य बँधाया - कर्ज और एहसान की कोई बात नही है , हम अपनी ड्यूटी पूरी कर रहे हैं "

१) डॉ. ने जगीरीमल को धैर्य क्यों बँधाया ?(२)
२) उपर्युक्त अनुच्छेद किस कहानी से लिया गया है, इसके लेखक कौन है ? (२)
३) जगीरीमल के फूट फूटकर रोने का क्या कारण था ? स्पष्ट कीजिए (३)
४) बगावत, उच्छृंखल, असबाब, प्रबल, रियासत , बेबस (३)

प्रश्न ३
"गाडी में तुफान आ गया | चारों और से मुझ पर बौछार पड़ने लगी |"
१) गाडी में तुफान क्यों आ गया ? (२)
२) किस पर बौछार पड़ने लगी और क्यों? (२)
३) लेखक को किस बात का नशा हो गया था? (३)
४) कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट करे | (३)

****